

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले
विद्यार्थियों के लिए)



अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2025
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.-051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-033 : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य-श्रव्य माध्यम	30.09.2025	31.03.2026

***नोट :** कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य-सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

- 1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

- 2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर-पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर-पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
- 3) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।
- 4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या :
	नाम :
	पता :
	
पाठ्यक्रम कोड :	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :
अध्ययन केंद्र का नाम :	तिथि :

- 5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- 6) अपने उत्तर केवल फुलस्क्रेप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नथ्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से

संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,
- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
- च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।
- छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।
- ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।
- झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।
- ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**
- ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।
- ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.-033
अनुवाद : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य-श्रव्य माध्यम
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.-033
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.-033/टीएमए/2025
अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रश्न संख्या 1 से 8 में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न संख्या 9 में दिए गए अंकों के आधार पर स्क्रिप्ट लेखन कीजिए।

1. स्क्रिप्ट लेखन की संकल्पना एवं स्वरूप का वर्णन कीजिए। 10
2. ड्रामा स्क्रिप्ट लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। 10
3. दृश्य-श्रव्य माध्यमों में रूपांतरण की प्रक्रिया की चर्चा कीजिए। 10
4. विविध क्षेत्रों में स्क्रिप्ट लेखन की आवश्यकता की विवेचन कीजिए। 10
5. 'डिजिटल माध्यमों के लिए रूपांतरण' पर लेख लिखिए। 10
6. 'सिनेमा के लिए रूपांतरण की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए। 10
7. रेडियो रूपांतरण की चुनौतियों की विवेचना कीजिए। 10
8. टेलीविजन के लिए धारावाहिक रूपांतरण की आवश्यकता की चर्चा कीजिए। 10
9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम में आपने स्क्रिप्ट लेखन के विषय में विस्तार से अध्ययन किया है। नीचे एक कहानी का अंश दिया जा रहा है। प्रस्तुत अंश पर हिंदी में सिनेमा रंगमंच के लिए स्क्रिप्ट तैयार कीजिए। 20

Through the long, lonely years of my childhood, when my father's palace seemed to tighten its grip around me until I couldn't breathe, I would go to my nurse and ask for a story, And though she knew many wondrous and edifying tales, the one I made her tell me over and over was the story of my birth. I think I liked it so much because it made me feel special, and in those days, there was little else in my life that did. Perhaps Dhairi Ma realized this. Perhaps that was why she agreed to my demands even though we both knew I should be using my time more gainfully, in ways more befitting the daughter of King Drupad, ruler of Panchaal, one of the richest kingdoms in the continent of Bharat.

The story inspired me to make up fancy names for myself: Off-spring of Vengeance, or the Unexpected One. But Dhairi Ma puffed out her cheeks at my tendency to drama, calling me the Girl Who Wasn't Invited. Who knows, perhaps she was more accurate than I.

This winter afternoon, sitting cross-legged in the meager sunlight that managed to find its way through my slit of a window, she said, "When your brother stepped out of the sacrificial fire onto the cold stone slabs of the palace hall, all the assemble cried out in amazement.
